



Microfinance Institutions Network (MFIN)

Jana SFB Case Study

Coverage Report

October 2019

Media Coverage Index

S. No.	Publication Name	Media
1.	Action India	Print
2.	Yugmarg_Haryana	Print
3.	Haryana Mail	Print
4	City Media	Print
5.	Atal Hind	Print
6.	Ashwini Times	Print
7.	Satyajai Times	Print
8.	Hadauti Adhikar	Print

Publication	Action India
Edition	Haryana
Date	19 th October, 2019
Page No.	09

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

यमुना नगर/एक्शन इंडिया ब्यूरो
यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैंटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। अपनी शादी के एक साल बाद, नरेश ने जुड़वा बच्चों (एक लड़का और एक लड़की) को जन्म दिया। खुशी के इस क्षण में भी इस दंपति को पैसों की कमी के चलते अपने जुड़वा बच्चों की परवरिश की चिंता सताती रहती थी। जैसा कि कहा जाता है, मुश्किलें एक साथ आती हैं। नरेश के बेटे

को बीमार होने के कारण एक महीने के लिए अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा। भारी-भरकम इलाज खर्च के चलते इस दंपति को एक मुश्किल दौर से गुजरना पड़ा। नरेश के पति ने जब अपनी कैंटीन के मालिक से अस्पताल का बिल चुकाने के लिए कर्ज मांगा तो उसने भी मना कर दिया। हालांकि, सौभाग्य से इनके पास ऐसे दोस्त थे जिन्होंने अस्पताल का बिल चुकाने में मदद की। नरेश के बेटे के ठीक हो जाने के बाद उसके पति ने 6,000 रुपये मासिक वेतन पर झड़वर की नौकरी करनी शुरू कर दी लेकिन इतने में भी पूरे परिवार का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत जरूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया।

Publication	Yugmarg
Edition	Haryana
Date	19 th October, 2019
Page No.	03

Jana Bank is helping women to become self-reliant

YAMUNA NAGAR: The article is about the patience and determination of Naresh Kumari, a resident of Yamuna Nagar, a small town in Haryana, who has taken her family out of the morass of poverty to a good economic condition. Naresh's husband used to work in a canteen on a nominal salary. He was the only earning member in a family of 5 and could barely meet the needs of the family. A year after his marriage, Naresh gave birth to twins (a boy and a girl). Even in this moment of happiness, this couple used to worry about raising their twin children due to lack of money. As the saying goes, the difficulties come together - Naresh's son had to be admitted to the ICU in hospital for a month due to illness. The couple had to go through a difficult phase due to heavy medical expenses. Naresh's husband refused when the owner of his canteen demanded a loan to pay the hospital bill. However, fortunately they had friends who helped pay the hospital bill. After Naresh's son was cured, her husband started working as a driver at a monthly salary of Rs 6,000, but even then it was difficult to manage the expenses of the whole family. But now things are fine as she managed to pay back her loan through Jana SFB .

Publication	Haryana Mail
Edition	Haryana
Date	19 th October, 2019
Page No.	03

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

हरियाणा मेल व्यूरो » चंडीगढ़

वमुनानगर। यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। अपनी शादी के एक साल बाद, नरेश ने जुड़वा बच्चों (एक लड़का और एक लड़की) को जन्म दिया। खुशी के इस क्षण में भी इस दंपति को पैसों की कमी के चलते अपने जुड़वा बच्चों की परवरिश की चिंता सताती रहती थी।

जैसा कि कहा जाता है, मुश्किलें एक साथ आती हैं। नरेश के बेटे की बीमार होने के कारण एक महीने के लिए अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा। भारी-भरकम इलाज खर्च के चलते इस दंपति को एक मुश्किल दौर से गुजरना पड़ा। नरेश के पति

ने जब अपनी कैटीन के मालिक से अस्पताल का बिल चुकाने के लिए कर्ज मांगा तो उसने भी मना कर दिया। हालांकि, सौभाग्य से इनके पास ऐसे दोस्त थे जिन्होंने अस्पताल का बिल चुकाने में मदद की। नरेश के बेटे के ठीक हो जाने के बाद ए उसके पति ने 6,000 रुपये मासिक वेतन पर ड्राइवर की नौकरी करनी शुरू कर दी लेकिन इतने में भी पूरे परिवार का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था।

परिवार की आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत जरूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला। जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसों से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। यहां तक कि उन्हीं पड़ोस की दुकानों से काफी प्रतिस्पर्धा का सामना भी करना पड़ा लेकिन फिर भी वो घबराई नहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना

एसएफबी से 25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गूर सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबर्दस्त वृद्धि हुई। अपने व्यवसाय को अच्छी तरह से संभालने के साथ नरेश अब अपने बच्चों की शिक्षा पर भी खर्च कर पा रही है। उनके उत्कृष्ट ट्रैक रिकॉर्ड के चलते अब उनकी पात्रता 75,000 रुपये के बड़े व्यक्तिगत ऋण की बन गई थी, जिसका इस्तेमाल उन्होंने अपने व्यवसाय को बढ़ाने में किया। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल जीवन जी रहा है। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जनलक्ष्मी फाइनेंशियल सर्विस (जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलूर में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी।

स्मॉल फाइनेंस बैंक ने 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू किया

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अप्रैल 2017 में फाइनेल बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त किया और 28 मार्च, 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू किया। वर्तमान में, यह बैंक भारत के 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 3.6 मिलियन ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। इसका लक्ष्य तेजी से बढ़ते भारत के सभी ग्राहक वर्गों और समुदायों को सेवाएं देने वाला अग्रणी समावेशी डिजिटल बैंक बनना है। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है। गुरुआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योग सेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों (जिनमें से 99% से अधिक महिलाएं हैं) और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही। तक पहुंच कर लगभग 2,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को सुआ है। 2011 के मध्य में आंध्र प्रदेश (एपी) संकट के बाद जो उद्योग लगभग खरब हो चुका था, उसके लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है।

Publication	City Media
Edition	Yamunanagar
Date	19 th October, 2019
Page No.	02

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

यमुनानगर , (सिटी मीडिया) 18 अक्टूबर । जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जनलक्ष्मी फाइनेंशियल सर्विस (जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलुरु में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी।

यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत

की तुरंत ज़रूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला। जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसें से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना एसएफ बी से 25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गुरु सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबरदस्त वृद्धि हुई। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल जीवन जी रहा है।

Publication	Atal Hind
Edition	Yamunanagr
Date	19 th October, 2019
Page No.	03

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

यमुनानगर । जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जनलक्ष्मी फाइनेंशियल सर्विस (जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलुरु में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अप्रैल 2017 में फाइनेल बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त किया और 28 मार्च, 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू किया। वर्तमान में, यह बैंक भारत के 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 3.6 मिलियन ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। इसका लक्ष्य तेजी से बढ़ते भारत के सभी ग्राहक वर्गों और

समुदायों को सेवाएं देने वाला अग्रणी समावेशी डिजिटल बैंक बनना है।

यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत ज़रूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला

जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसों से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना एसएफबी से 25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गुरु सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबर्दस्त वृद्धि हुई। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल जीवन जी रहा है।

Publication	Ashwini Times
Edition	Yamunanagar
Date	19 th October, 2019
Page No.	04

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

यमुना नगर। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जनलक्ष्मी फाइनेशियल सर्विसेस (जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलुरु में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अप्रैल 2017 में फाइनेल बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त किया और 28 मार्च, 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू

किया। वर्तमान में, यह बैंक भारत के 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 3.6 मिलियन ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। इसका लक्ष्य तेजी से बढ़ते भारत के सभी ग्राहक वर्गों और समुदायों को सेवाएं देने वाला अग्रणी समावेशी डिजिटल बैंक बनना है। यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक

कैंटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार को जरूरतों को पूरा कर पाते थे। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत जरूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला। जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसों से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस

कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना एसएफबी से 25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गुर सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबर्दस्त वृद्धि हुई। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल

जीवन जी रहा है। भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है। शुरुआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योगसेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों (जिनमें से 99 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही) तक पहुंच कर लगभग 2,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को छुआ है।

Publication	Satyajai Times
Edition	Haryana
Date	20 th October, 2019
Page No.	05

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा है मदद

यमुनानगर, 19 अक्टूबर, सत्यजय टाइम्स। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जन लक्ष्मी फाइनेंशियल सर्विसेज(जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलुरु में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अप्रैल 2017 में फाइनेल बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त किया और 28 मार्च, 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू किया। वर्तमान में, यह बैंक भारत के 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 3.6 मिलियन ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। इसका लक्ष्य तेजी से बढ़ते भारत के सभी ग्राहक वर्गों और समुदायों को सेवाएं देने वाला अग्रणी समावेशी डिजिटल बैंक बनना है।

यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत जरूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसों से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना एसएफबी से 25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गुरु सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबरदस्त वृद्धि हुई। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल जीवन जी रहा है। भारतीय माइक्रो फाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है। शुरूआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योग सेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों (जिनमें से 99 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही) तक पहुंच कर लगभग 2,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को छुआ है।

Publication	Hadauti Adhikar
Edition	Haryana
Date	20 th October, 2019
Page No.	03

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में कर रहा मदद

अधिकार संवाददाता

यमुनानगर, 19 अक्टूबर। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक, पहले जनलक्ष्मी फाइनेंशियल सर्विस (जेएफएस) के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्यालय बैंगलुरु में है और यह पिछले एक दशक से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह उन 10 वित्तीय संस्थानों में से एक है, जिसे 2015 में आरबीआई से एक स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त हुई थी। जना स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अप्रैल 2017 में फाइनेल बैंकिंग लाइसेंस प्राप्त किया और 28 मार्च, 2018 को बैंकिंग परिचालन शुरू किया। वर्तमान में, यह बैंक भारत के 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 3.6 मिलियन ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। इसका लक्ष्य तेजी से बढ़ते भारत के सभी ग्राहक वर्गों और समुदायों को सेवाएं देने वाला अग्रणी समावेशी डिजिटल बैंक बनना है।

यह कहानी हरियाणा के छोटे से शहर

यमुना नगर की रहने वाली, नरेश कुमारी के धैर्य और दृढ़ संकल्प की है, जिन्होंने अपने परिवार को गरीबी के दलदल से निकालकर अच्छी आर्थिक स्थिति तक पहुंचा दिया है। नरेश के पति मामूली से वेतन पर एक कैटीन में काम करते थे। वे 5 लोगों के परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और बड़ी मुश्किल से परिवार की जरूरतों को पूरा कर पाते थे। परिवार को आमदनी के वैकल्पिक स्रोत की तुरंत जरूरत होने के कारण नरेश ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का फैसला किया। लगभग उसी समय, उन्हें जना स्मॉल फाइनेंस बैंक के बारे में पता चला जहाँ से उन्हें 15,000 रुपये का पहला समूह ऋण मिला। इन पैसे से उन्होंने अपने घर पर एक छोटी किराना दुकान शुरू की। नरेश के इस कदम का उसके परिवार ने बड़ा विरोध किया लेकिन वो अपने फैसले पर अड़ी रहीं। नरेश ने न केवल अपने ऋण का भुगतान किया, बल्कि जना एसएफबी से

25,000 रुपये के एक और ऋण के लिए आवेदन किया। व्यावसायिक गुरु सीखते हुए उन्होंने अपने दूसरे ऋण से अपनी दुकान के लिए ऐसे उत्पाद खरीदे जिनकी उस इलाके में काफी मांग थी। इससे नरेश की आमदनी में जबर्दस्त वृद्धि हुई। अपने प्रयासों और जना एसएफबी की मदद के जरिये, नरेश कुमारी और उनका परिवार अब एक खुशहाल जीवन जी रहा है।

भारतीय माइक्रोफाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है। शुरुआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योगसेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों (जिनमें से 99 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही) तक पहुंच कर लगभग 2,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को छुआ है।